भगवान बनाते नारी को श्री लक्ष्मी समान

ब्रह्माकुमार राम लखन,

शान्तिवन—आबूरोड

सद्गुणों और उत्तम लक्षणों की प्रतिमूर्ति आज भी श्री लक्ष्मी जी को दर्शाया जाता है। मुख पर माधुर्य—शान्ति, हाथों में पवित्रता व निर्लिप्तता का प्रतीक कमल, नयनों से अपनत्व के साथ शक्ति की भासना रत्न—आभूषणों से सुसज्जित व माथे का उनका मुकुट हर किसी को प्रेरित व आकर्षित करता रहता है। उनकी पावन दृष्टि वृत्ति और कीर्ति सर्व को पवित्रता की शक्ति से समृद्ध रहने का पाठ पढ़ाती हैं। उनके दर्शन मात्र से सद्गुणों का प्रादुर्भाव होने लगता है। सच में महिलाओं के सद्गुण उनके लिये रत्न जड़ित ताज हैं। पवित्रता व सत्यता से सुख—शान्ति—आनन्द रूपी सर्वश्रेष्ठ धन स्वत: प्राप्त होते हैं। सच्चाई—सफाई से ही मस्तक ऊँचा रहता और गौरव बढ़ता है। सन्तुष्टता से स्वत: आत्म सम्मान बढ़ता है। ज्ञान—गुण व दुआओं का खजाना जमा करते रहने से जीवन श्री लक्ष्मी समान बन जाता है।

पुरूषों की अपेक्षा महिलायें अधिक धर्मशील होती हैं। परिवार—समाज व राष्ट्र के तरफ से उनकी शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबन्ध होना चाहिये । उन्हें भी सुपथगामिनी और सदाचारिणी स्वरूप सदा बनाये रखना चाहिये। सदाचारिणी व विदुषी माताओं की सन्ताने भी धर्मशील, विद्वान तथा सदाचारी होती हैं। माता के अंगों से ही बच्चों के अंग—२ बनते हैं। माता के संस्कारों के अनुसार सन्तानों के मन—बुद्धि—संस्कारों का निर्माण होता है। इसलिये पुरूषों की अपेक्षा नारियों के शील—स्वास्थ्य और धार्मिक जीवन पद्धति पर ध्यान दिया जाना चाहिये। वे भी शुभ, शोभा और शोभनीयता से सदा सुशोभित होनी चाहिये। सुरूपा महिलाओं की आकृति—प्रकृति दर्शनीय व छवि शोभनीय होनी चाहिये। उन्हें हमेशा स्वच्छता और स्वस्थता का खुद ध्यान रखना चाहिये। स्वयं को प्रसन्नवदना बनाये रखना चाहिये। सदा शोभनिक बस्त्र आभूषण धारण किये रखना चाहिये। शोभनीयता का शील व स्वभाव से बहुत गहरा रिश्ता है शालीन—शील और साधु स्वभाव से ही वे हमेशा सुशोभित हो सकती हैं। कर्कश और शीलहीना बस्त्र आभूषण पहन कर भी अशोभनीय लगती हैं। झूठ—फरेब व बेइमानी से रहने वाली को लज्जित होना ही पड़ता है। आत्म संतोष और आत्म सम्मान ही सबसे बड़ा धन है।

हंसमुख व शालीन महिलायें साधारण वस्त्रों में भी सुशोभित होती हैं। पुरूष की वे ही तो शोभा—सम्पदा और जीवन हैं।

ईर्ष्या—द्वेष—लड़ाई—झगड़ा करने वाली महिलाओं का रूप—लावण्य बहुत ही जल्दी नष्ट भ्रष्ट हो जाया करता है। शोभनीय माताओं की संतानें शोभनीय और कर्कश नारियों की सन्तानें भी अशोभनीय बन जाती हैं। उन्हें लक्ष्मी (धन) से सदा युक्त रहना चाहिये। वे स्वयं हैं भी लक्ष्मी। जहाँ लक्ष्मी स्वरूपा नारी हो वहाँ धन की कमी हो नहीं सकती । पुरूषों द्वारा कमायी गयी, अपने द्वारा भी अर्जित की गयी लक्ष्मी का जब महिलायें मितव्ययता से प्रयोग करती हैं तो उनका घर परिवार धन—धान्य से सदा पूर्ण रहता है। उन्हें चाहिये कि खूब मेहनत से घर के सभी कार्य व्यवस्थित करके रखें व्यसन और विलासिता पर धन बिल्कुल नहीं खर्चना चाहिये। भोजन—भजन और रहन—सहन का सुप्रबन्धन करते रहना चाहिये। सुस्वास्थ्य से लक्ष्मी का स्वत: शुभागमन होता है। सामाजिक कार्यों और कुरीतियों पर भी धन को व्यर्थ नहीं बहाना चाहिये। आय—व्यय का लेखा—जोखा रखने से घर में धन की बृद्धि होती है। जो घर धन—धान्य से भरा—पूरा होता वहाँ सुख—शान्ति—आनन्द—पवित्रता सब में बृद्धि होती ही रहती है।

महिलाओं को भीरू—डारपोक और ओजहीन न होकर उग्र—निर्भय—साहसी और अदम्य ओजोमयी रहना चाहिये। सुलक्षिणी व अपना लज्जावती स्वरूप भी बनायें रखें। परन्तु दीन—हीन, ओजहीन किसी भी हालत में नहीं हों। झिझक और संकोची होने से ही ओजहीनता आती है। उनकी सहनशीलता जहाँ आभूषण है वहीं उग्रता भी परम आवश्यक है। बड़ी से विपत्ति को सहन करना उनके स्वभाव की सबसे बड़ी विशेषता है। पर उनमें इतनी तत्परता का गुण और उग्र स्वभाव भी होना चाहिये। जिससे कि उपेक्षा व अपमान भी न होने पावे। ओज से साहस का विकास और उग्रता से स्वमान की रक्षा करते हुये उन्हें ज्ञान गुणों से समलंकृत रहना चाहिये।

वर्तमान समय के पुरूषोत्तम संगम युग पर सर्वशक्तिवान शिव खुद माँ रूप से सर्वआत्माओं कों नर से श्री नारायण और

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com